

DPN 6582

Title : देवी महात्म्य DEVI MAHĀTMYA

Run. No. 7307

Cat. No.

Micro. No.

Subject Dharma Shashtra धर्मशास्त्र
Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 26 × 11

Folios 20

Lines (in a page) 11

Compl. / Incompl.

missing 1
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Folio - 2. तादापद्धि त्यो राजा सिकारको त्रेडु गरि. डुकुम भयापद्धि रकला घोडामा
चल्लीकन गहन^{लो} वन छन् तपसमा पसन गयो ॥ ५ ॥

अर्थः॥ ते श्रेष्ठ जाला इव ठियातर हसित आकाशो रानाति या त्याजै राजा को पारना ॥ एव
 मा मुसलमान का राजा हरु शयुभै सुरधरा जासित लउम केन उठो थ्या ॥ अर्थः॥ ते मा
 कोर पुरधरा जा को बडो को जलीकन आपस्त मा कन युद्ध कुं थ्या युद्ध मा मुसलमान लेहि
 तस्य पालयतः सम्पत् प्रजा पुत्रानि वीर साना वरुषः शत्रु वीर पाः को ला विधं सि गम
 तस्य ते रभव युद्ध मति प्रवल दंडिन ॥ नूनै रमित नै युद्धे को ला विधं सि जिजिती ॥
 रमा या तो निज देशा धियो भवत ॥ आकांतः समहा ॥ लौ लदा प्रवलारिजा ॥
 जैर्वलि जिडुं छै दुर्वल स दु रात्मनि ॥ को सवल या परुतं मत्र पितृ पुरेतत ॥
 नाम राजा को हर कुं थ्या ॥ अर्थः॥ लहो पाडे सुरधरा नाम राजा आय नाम
 पछि वाट आउं देर ॥ को ला वलिया वीर के ते जहर न सकना
 का सहर मा आउं थ्या ॥ को ला मा दुष्ट वं वंत जो अर्थः॥ को ला को न डरानि
 दोसिल या अं पमान

25

15

10

5

दुर्गा:

अर्थः॥ ताहायदि त्थो राजोसिकारकोनिडुगरी. ५६॥ नयायदि एकला जोडा मावरी कर्म गह
नजो वन नून. तसमापसन गयो॥ २॥ अर्थः॥ वनभाजो दाजो दा. एकजगामा मेधानामवाहूत को
एक आश्रम देषया नयो. कस्तो आश्रम न्या मुनिशिष्य तेशो नित नयाको वाधर होवि वनमृगलेपनि

तगो मृगयायाजेन. रुतः सायः स रूपति॥ एंकला घोडो मावेहि कने॥ एकाकी हयमाहूत जगामग
हनं वनमा॥ २॥ सतत्राश्रम वडासी. द्विजवयस्य मेधसः॥ प्रशांतः शायदा कीर्ण मुनिशिष्यो
पसो नितम॥ १०॥ तस्थो किचित्सकालं व मुनि ततेन सत्कृतः॥ इतश्चेत श्रविवरनू त्तामि
मुनिवर अमे॥ ११॥ सो वितयत्र दानत्र मम त्वाहूत मानस॥ ममैव पालितं पूर्वं मया हि न पु

वहुतै शो नित भयाको देषो॥ १०॥ अर्थः॥ त्पुस्त आश्रममाः अतिकविश्रामग नक नवस्थाको राजाहू
तको मेधाले. वडासमान पूर्वक सोधनी गथ्यो. एता उता राजाहे हुता. मनमा वितना गथ्यो॥ ११॥ अ
र्थः॥ तो सुरथरागमराजा. ममताले को ध्याको. मनमा नत्र पस्यो. मेले पात्याको जो दरवारा यथ
तो आज ही न जयोहा॥ १२॥ ॥

॥ ८६ ॥ ५६६५॥ ६६६६॥ ५६६६॥ ५६६६॥

अर्थः॥ मेरा जो न तु गुलाम छन. तनेले सदा उमत्त जो मेरा शूर नाम हाथी थियो. तेस्त नध मेले पात
हं कि पाल देन॥ १३॥ अर्थः॥ कि तो हाथी मेरा वैरी का. हातपरि वस. काबु न मोहो. जो मेरा अनुग
तपदि. हिड्या. डुलया घानला उनया उंथा॥ १४॥ अर्थः॥ ति. आज अरु की सेवा गदो कुन. मेरा भंडा या
हुरुले. भंडार को धन पति सवना स्याहुन॥ १५॥ अर्थः॥ तो सुरथनाम राजा आक्रामनमा वडोदु

महुत्तै रस हुत्तै. धर्मतः पाल्यते नवाः॥ नजाने सप्रधानो मे. शूरोरुति सदा मदः॥ १३॥
मम वैरी वश यातः काओ गानु पल प्यते॥ येम मानु गतानित्यं प्रसादधन जो जने॥ १४॥ अर्थः॥
रुति त्रं कुवंत्य अकुर्वन्त्य न्यमही भूताम्॥ असम्यग्वायशी लेत्ते. कुर्वद्भिः सुमतं वयं॥ १५॥ स
विततु सोति दुःखेन सद्यः कोशो गमिष्यति॥ एतच्चा न्यत्र सततं वितयामास पार्थिव॥ १६॥ तत्र विष्णु अ

: खग रेशोक युक्त भै एता एता अने कवाटः मनमा समझि उदास कुंथो॥ १६॥ ॥ एमगा ॥
अर्थः॥ उसवेला मावि पुजो मेधा वास्त्रा को आश्रममा. एकवैश्य पति देषो. राजाले ते स्ते उतो धनिग
गदा. इहा आयाको का अर्थ हुं नंदा॥ १७॥ ॥

जो मेरा अनुग तपदि. हिड्या. डुलया घानला उनया उंथा॥ १४॥ अर्थः॥ ति. आज अरु की सेवा गदो कुन. मेरा भंडा या

उपार्गः

3

अर्थः राजा सोधदुन शोकले पुक्त भया को तलाइ देष दुःख लयने दुन एता राजा ले भया को पति वा का
सुनिकन ॥ १ ॥ अर्थः तले नमृत भया को वैश्य राजा छेउ जवाप को उत्तरादि ॥ २ ॥ वैश्य मंद समाधि नो म
वैश्य कुं धनि वडा मुहाजन का कुल मा मेरो जन्म हु ॥ २ ॥ अर्थः पुत्र हरु स्वासनि ले धन को ॥ ३ ॥ मलो भ
माला गिकन मलाई वन मा धयाइ राखा दुन स्वजन ले स्वासनि ले हीन भया को दुःख ॥ २ ॥ एते दुःख ले वन मा आइ वन
रा शोक इव कस्मात् दुर्मना इव लक्ष्मी ॥ इत्या कर्ण व वस्तु भूपतेः पण येदिने ॥ १ ॥ अर्थः सुखा वसतं
वैश्यः पश्या वन तो नृपं ॥ ॥ वैश्य उवाच ॥ समाधि नो म वैश्यो ह मुत्पन्नो धनि ना कुलो ॥ २ ॥ पुत्र दारै
निबल शु धन लो भाद शाधु जि ॥ विहीनः स्वजनै दारैः पुत्रै रादा म मे धन म् ॥ २ ॥ वन म न्यागतो दुःखी
निरल आस वंधु जि ॥ सोहं न ये नि पुत्राणां कुशला कुशलात्मिकां ॥ २ ॥ इति स्वजनानां व दारणां वात्र स
को आपत्त दाजु भाई ले मलाई छोडि राखा दुन को कुशल पाई देना ॥ २ ॥ स्वजन भित्र को दारा हरु को काहा
वसि के हियात पनि जा निन त का घर को कुशल मै ले बालन पाउ न्या भ्रमा तिने हरु मेरो हकि गत सोध कुं कि सो
धेन न् ॥ २२ ॥ ॥

अर्थः ॥ तिः अस्तवृत्त जो मेरा छोरा दुन ति को नातर हरु हा कुन राजा चंदन जो पुत्र ले धन मा ॥ १ ॥ नृप
पि तलाइ वन मा धयाउ न्या उ सै माधि ॥ २ ॥ तेरो प्रितिका अर्थ ले व दो त्यो क दुर्भंदा वैश्य मंद मलाई
अर्थ ले मोह भयो जति म माधिः कुराग न्या को वाज विजर हे ॥ २ ॥ का गरु यो मेरो मन नि कु र भाव मा
कथं ते किं नु स हृत्ताः दुर्दृष्टाः किंचु मे सुता ॥ ॥ राजा उवाच ॥ ये निरल भवान् लुब्धैः पुत्र दारा
दिभिर्दुर्जनैः ॥ २ ॥ तेषु किं न वतः स्नेह मनुष्यातिमानसं ॥ ॥ वैश्य उवाच ॥ एव मेत शया प्राहम
वान् स्मरुतं व व ॥ २ ॥ किं करोमि न व भ्राति मम नि कु र मम ॥ येः सत्यं पित स्नेह धन लुब्धै
निराकृता ॥ २ ॥ पति स्वजन हाई व हाई ले सेव मे मन ॥ कि मेत न्ना मि जाना मि जान न मि ॥ २ ॥
जा रे न जस ले पित को ह त्या गरि वन माला न्या को दुःख अपनि ति नै माधि प्रितिको ॥ अर्थ ॥ २ ॥
पति स्वजन को जो मे विभाव द् यो मेरा अधीक उको म्मा पित दि प्रति से मलाई न म जो हा तो रे
व नै न न्ना हे महा बुद्धि ॥ २ ॥

दुर्गा

४

अर्थ जाजो विगुण बांधव माधि मेरो धेरै प्रेम प्रवण भयाको कथा अर्थ ले हो जात को मोह माधि जा
वि त्रपनि नै दुर्वले पति भयाको दुःख ॥ २० ॥ हे राजा हो यो मेरा मन नि सुरक्ष नात हले होला मार्कण्डेय क वि
जैमिनि छे उ कहं छन एत्तो त मेका आयला मा कुरा कह नि गरि दुइ जना मेधा बाह्य ए छे गेकन घ

मत्ये म प्रवण वि त्र विगुण स पि वं धु पु ते धां के ते मे नि खा सा दोर्मन स्यं व जा ग ते ॥ २१ ॥ करो मि
किं य न्न मन ले स पी ति धु नि दुर म् ॥ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ त त तौ सहितौ विप्र तं मुनि स मु प स्थि
तौ ॥ २२ ॥ समाधि नो म वै शो सो स व पार्थिव से त्त मः ॥ कृत्वा तु तौ यथा मायं यथा ह ते न तं विद
म् ॥ २३ ॥ उप वि द्यो कथाः काश्चिच्च क तु वै श प पा थि वी ॥ राजा वाचा न ग व त्वा म हं प यु मि द्वा मे क व

डा भया छन ॥ २४ ॥ समाधि ना म वै श्य र तु र ध ना म रां आ कु आ पु ज स्तो कुरा पिया मेधा सुधा उ रे छ न नि
ति दुइ जना कहं छन ॥ २५ ॥ अरु पनिके कहि या हा छन अनि आ कु वि द्या र प नि ग न्ना भया छन राजा कहं छन
हे बाह्य ए हो त पाई छे उ एक थो क कुरा सुधा उ छे उ त्त र रामो गरि व क्त नु होला ॥ २६ ॥ ॥ राम ॥

का १ जा ३

यो मेरे मन मम तो मा अधी क भयाको अखिल संपूर्ण राज म हा प्र ति व द्वा को कथा अर्थ होला ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ हे मुनि स त्त मा मे क तो गरि मूर्ध न या को दुं यो वै श्य प नि खा त नि हो र छे रि पारि या ले छे द्या को ॥ २८ ॥
स्व जन दा ज्यु जाइ ले छे द्या प छि अरु प नि ति आ धि धे र पी ति छ एत्तो मे रा प नि एत्ता प नि मो ह मा धि
ः ख भया को छे ॥ २९ ॥ म म ता ले वा द्या का हा मि दुइ जना दे ष दा दे ष दे हे म हा भा ग क वि हो य त्तो ॥ ३० ॥
छं दा छं दे सो हि त भं त्रुं ॥ ३१ ॥ मे रो र य त्तो वि वे क अं ध ता को मू ढ ता न भो मे धा नं छ न हे राज नू स म त्त

दुःखा य य नू मे म म सः स्व वि त्रा य त तां वि ना ॥ म म त्वं म म र ज्ञा स्य र ज्ञा मे स्य पि ले स्य वि ॥ ३२ ॥ जान ते
पि य था ज्ञ स्य कि मे त नु नि स त्त मः ॥ अ यं व नि दू तः पु त्रे द्वा रे नृ त्ये स्त थो जि त ॥ ३३ ॥ स्व ज ने
व सं त्य क्ते पु हा र्दी त था प ति ॥ ए व मे धा त था हं व द्वा व प त्यं त दुः खि तो ॥ ३४ ॥ दृष्ट दा धे पि वि
ष ये म म त्वा कृ ष्ण मा न तौ ॥ त क्ते तै त म हा भा ग य नो हो जा नि नो र पि ॥ ३५ ॥ म म स्य व ज न तो
वि वे का धं स्य मू ढ ता ॥ ॥ अ धि ह वा व ॥ ज्ञान म त्ति स म स्त स्य जे तो वि ष यो व ॥ ३६ ॥ वि ष
य स्य म हा भा ग या ति वै र्य पृ थ क पृ थ क ॥ दि वां धाः प्रा नि नः के वि द्या नं व धा न या पे ॥ ३७ ॥

नि भ या का प्रा णी हृ द य मा ज्ञान छ ॥ ३८ ॥ शान वि ष ये त य ता हृ द य व र द्वा णि वा त्र नि क्त र ह क
ऊं छ जा ति प नि मि त्रे त र ह को छ को इ पा णि दि न मा आ स ॥ ३९ ॥ न को र प्रा णि र ह क

25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35

दुर्गाः

कोइ प्राणि हूह दिन मा पनिरात मा पनिरा वर देष न्या र ह्य ह न त्प समा मा को हु लो बुद्धि ॥ ३१ ॥
जकारण पशु पक्षि हूह गृह पनिरा त वे ज्ञान र ह्य ह न त्प ज्ञान मानि स को र मृग पक्ष को नु ल्प ह्य ॥ ३२ ॥
मानि स को र अरु जाति को मोह वरो वर जा नु प ह्य का अर्थ पते ग घ छि परे वा आ प्रा नु बो ले को ह्य
के वि छि वा त थार त्रौ प्रा णि न लु ल्प ह्य य ॥ ज्ञानि नो मनु जा स त्प कि नु ते न हि के व ल ॥ ३३ ॥
य तो हि ज्ञानि नः सर्वे पशु पक्षि मृ गा द्य ॥ ज्ञानं व त न्म नु धा णी य ते षां मृ ग पक्षि
णां ॥ ३४ ॥ मनु धा नां च य ते षां नु ल्प म य त्र यो न यो ॥ ज्ञाने पि स ती प श्ये ता न्य तं गा श्च य वं
बु ध ॥ ३५ ॥ क रो मो ह तो मो हा ती अ मा ना न पि सु धा मा नु धा म नु जा या बु धा नि ला षाः सु ता नु
ति ॥ ३६ ॥ लो ना य नु प का र य न च ते कि त्र प श्य सि त था पि म म ता व र्त्त मो ह ग र्ते नि पा ति ता ॥ ३७ ॥
म हा मा या पु न्रा वे ण सं सा र स्थि ति का रि णा त त्रा त्र वि स्म य का र्यो यो ग नि द्रां ज ग त्प ते ॥ ३८ ॥
ना कु रा त्या उ ह न हे रा ॥ ३९ ॥ आ प्रा वा न ष ह र ला उ सु वा व ह न लो नु ले बो लि म ता ई दे ता न नि पा त्या को हि र त्प तो हि
प न्ति स म नि को र ह ॥ ४० ॥ म नि स त्प त्प ल म को र ला ई दे ह न लो नु ले बो लि म ता ई दे ता

रामः

अनिपात्या को हे र म था पि मा नि स का मो ह न व रि वा ड ल मा मा वि स प या का ह न ॥ ४१ ॥ हे र जा हो यो स वै म हा
मा या को पु न्रा व ह सं सा र को स्थि ति ग र्तो ति म हा मा या ह न य स्मा क त्रि सं दे ह न मा नु जो ग नि द्रा को का र ण ह
॥ ४२ ॥ वि धु का ने त्र मा व स्था कि जो जो ग नि द्रा ह न ति ज्ञानि का ह द य क न प नि ति नु ले यो सं सा र क न प नि मो
हि त ग न्या को ह ॥ ४३ ॥ व त ग री क न मो ह मा धि ले नो ह न ति नु ले यो व र सं सा र न्या को ह ज ग त्प त्प उ त्प
म हा मा या ह रे श्चै वा त या सं मो ह ते ज ग त् ॥ ज्ञानि ना म पि ये तां सि दे वी भ ग व त्नी हि ता च
॥ ४४ ॥ व ला दा क थ मो हा य म हा मा या पु य ह ति ॥ त या वि सृ ज्य ते वि श्वं ज ग द त च रा व रो ॥ ४५ ॥
ते षा ष स स त्रा व र दा नृ णां न व ति मु क्त ये ॥ सा वि श्रा प र मा मु क्ते हे तु नू ता स ना त नी ॥ ४६ ॥ सं
सा र बंध हे तु श्च सै व सर्वे श्च रे श्व र ॥ र जो वा द ॥ भ ग व त्ता हि ता दे वी म हा मा ये ति यां भ ग न् ॥ ४७ ॥
ति हे तु ह ॥ ४८ ॥ सं सा र का बंध न हे तु सर्वे श्च री ति नै ह न र जा न ह न हे न ग व नू ति मि ज स क न धे स्तो
प र क म वं त ई ह्यो ति नु को वी क्वा त र मा हा मा या ना उ त्र यो ॥ ४९ ॥
२ को दु र्गा प्र स त्र न या प क्षि व र दान प नि दि ह न मु क्ति का हे तु प नि ति नै ह न ति सं तु ष्ट न या प क्षि वि शा क्

महादेवः

दुर्गा:

५

अर्थः॥तिमिक कृकलातरहसिततिउत्पत्तिभईनूतिनकाकमपनिउत्पत्तिपनिप्रभावनिर्दिष्ट
नि.आशागर्नुहवस॥४७॥त्योविस्तारदुर्गेकोसुंनकर्तवहुतेइहाइतपाईलेकखाजावसमेधात्रभिर्न
इनहेएजाहोएलातरहकोदुर्गेद्वनूतिनित्यस्वरूपद्वनूजगन्मूर्तिरूपद्वनूतिनलेयोसंसारप्रकत.

धवीतिकथमुत्पन्नासाकर्मोत्पाश्रुकिंदिज॥यत्प्रजावावसादेवी.यत्स्वरूपायदुद्रवा॥४८॥त
सर्वश्रोतुमिहामित्तोवृक्षविदांवरा॥आधिरूपावानित्येवसाजगन्मूर्तिस्तयासर्वमिदं
तत्त॥४९॥तथापितत्समुत्पत्तिर्वदुधाश्रूयताममा॥देवानांकार्येतिद्वार्थमाविर्भवत्तिसाप
द॥४९॥उत्पत्तेरितिदालोके.सानित्याप्यभिधीयते॥योगनिद्रांयदाविष्णुजगत्प्रेकार्णवीक

गन्याकोविस्तारभयेहः॥४९॥त्योदेवैषकारसिततनूकोउत्पत्तिरपराक्रमकर्तुंदुसुनदेवताकोका
र्जेषुयानुनकनप्रकटहनावेलाभाउत्पत्तिप्रयाकोह॥४९॥योगप्रोक्तयामर्कहहुतिनूकोनाउनि
त्याहजनादिनमाधोगतिप्रवृत्तप्रोक्तमस्तुवेद्य एकार्णविसमुद्रयियो॥५०॥

योगनिद्राले अभिवाहविष्णु भयाकाधिया

राम

५

तेहदिनमाशेषनागकोशयोगरीकल्यांतमा.प्रनुजोहजगवानूतिसुत्पाकाविद्योअरुदिनमाम
धुर.कैटभइईदैत्यप्रस्थाईहः॥५१॥विंकाकायागुजिवाटजमभयाकोरहेहविष्णुकात्रात्रिकमलमा
वसाधियतकोनाशगर्नकनतयारुईया॥५२॥ताहापदि एकाग्रहृदयनेवसीकनइईदैत्यलेआफु

आहियंसैषमभजत्कल्यांतभगवानूपशुभातदाद्यावपुरोद्योरोविख्यातोमधुकैटभो॥५१॥विष्णु
कर्णमलोद्गतोहंनुंबुसाएमुद्यतो॥सनात्रिकमलेविस्त्रोस्थितोबुसाप्रजापति॥५२॥इह्वावा
वपुरोद्योप्रोप्रसुर्भजनादनां॥मुखावयोगनिद्रांतामेकाग्रहृदयस्थिता॥५३॥विबोधना

र्थोप्रहरेईरिनेत्रकृतालयो॥विश्वेश्वरीजगद्धात्रीस्थितिसंहारकारिणी॥५४॥निंद्राभगव
तीविस्तरतुलांतेजसःप्रभो॥॥बुलोवावा॥यस्वाहात्वंस्वधात्वंहिवपद्मारस्वधात्मिका॥५५॥

कनहान्याउवलदेविकर्जनादंनसुत्पाकारघाह्नवेरीहांनकनतयारभयाकोदेविकन॥५३॥विष्णु
कात्रागोहृदयसजनिनेत्रमा निवासगन्योत्रोविश्वेश्वरीजगद्धात्रीस्थितिसंहारगन्योकोरूपद्व॥५४॥
विष्णुईश्वरकोअनुलतेह्वाह्ननूकानेत्रमानिवासागन्योकोसुतिपुष्पागर्हन.इहाह.हंदा

25

15

10

5

ॐ

मित्रहास्यरूपस्वधास्वरूपवषट्काररूपस्वरात्माकाशो॥५॥ सुधास्वरूपनिमित्तं
पतिमिनितास्वरूपनिमित्तिमात्रास्वरूपनिमित्तिश्रद्धामात्रास्वरूपानुष्ठानमात्रास्वरूपनिमित्तो॥५॥
हृदेवीतिमीकलासावित्रीस्वरूपजननीस्वरूप. आपेक्षेतिमित्तसंसारकोधारणायोत्पत्तिपति
सुधास्वरूपमक्षरेनित्ये. त्रिधामात्रात्मिकास्थिता॥ अर्द्धमात्रास्थितानित्याद्यानुष्ठार्यावि
शेषता॥५॥ त्वमेवसात्वंसावित्रीत्वंदेवीजननीपरा॥ त्वयैतद्वार्यतेविश्वंत्वयैतत्सृ
ज्यतेजगत्॥५॥ त्वयैतत्पात्यतेदेवि. त्वमत्प्यंतेवसर्वदा॥ विसृष्टोसृष्टिरूपात्यस्थि
निरूपावपालने॥५॥ तथासंरुतिरूपातेजगतोत्पजगन्मये॥ महाविद्यामहामायामह
गय्योतिमि॥५॥ हृदेवीयस्संसारकोपालनागर्नजान्माकोसृष्टिगम्यवेनामासृष्टिरूपप्रितिका
दिनमास्थितिरूपनिमित्तिआपेक्षे॥५॥ संसारगर्नमनतामोन्नम्यायस्संसारकोसहारगर्न॥ आप
जगन्मयहोमहाविद्यास्वरूपमायास्वरूपमहास्मृतिस्वरूपहो॥५॥ ॥ रामरामराम॥ ॥

महा बुद्धि स्वरूपः

विभावित

महामोहस्वरूपतुमोह. महादेविमहासूरोरूपतमोह. सर्वजगत्संसारकोषरुतिस्वरूप. ते
मिगुणत्रयलोणीतिमिहो॥६॥ लब्धारूपपुष्टिरूपतुष्टिरूपशान्तिरूपस्वप्नितिमिहो. श्रुति
नितिमिहो. वक्रिणीतिमिहो॥६॥ शान्तिनीतिमिहोधनुषधारी. मुमुक्षुणीरपरिधजला

महामोहावभवतीमहादेवीमहासुरी॥ प्रकृतिस्वरूपसर्वस्यगुणत्रयविजायिनी॥६॥ ल
आपुष्टितयातुष्टित्वंशान्तिः. शान्तिरेव॥ खड्गिनीश्रुतिनीचोरागदिनीवक्रिणीतया॥६॥
शान्तिनीवापिनीवाणमुमुक्षुणीपरिधायुध॥ सोम्यासोम्युतराशयसोम्यभस्वनि॥६॥
॥६॥ परापरणपरमात्ममेवपरमेश्वरी॥ अथकिंचिद्विक्तयिक्तसदसद्वित्तमितिका॥६॥

सुधतमोहातमाह. वाणतमाहातमाहसोम्याहियनिटेरामो. स्वरूपतमोह॥६॥ पर
मवाहिपरमरूपतमोह. हेपरमेश्वरिअखिलसंसारमावातुतपमाकेहिकयाकोवत्त
स्वरूपअसत्त्वाकेहितप्रोरूप॥६॥

उर्गा:

८

अखिलजगत्मा शक्तिः का सा मय रूपं तत्रोद्धृत्य ता उन्नम रूप को वर्णन को गर्न सकला तिमिलेय
 सस्सा रमा वनग न्या जो पर वल्लभ न॥ ६४॥ तिपनि निडा ख रूप लेति मिले वश्य का वृग रा हा
 त्याहो यत्ना तत्रो रूप को सुतिको गर्न सकला मा र विष्णु शिव तत्रा का वृमा आया काहो॥ ६५॥
 तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वर्कि ह्य सत्र का॥ यया त्वया जगत्तृष्टा जगत्ता ता तिमि ज
 गत्त॥ ६४॥ सोपि निडा वशं नीतः कलोलं तु मिहेश्वर॥ विष्णुः शरीरं ग्रहणं महती शा
 एव वा॥ ६५॥ कारिता स्ते यतो तत्त्वा कः सो लु शक्ति मान जनेन॥ सा त्वर्कि त्वं प्र भावे त्वे
 दा र्दे विसं लुता॥ ६६॥ मोहयेतौ दुराः धर्षा वसुरो मधु कैटभो॥ प्रबोधं जगत्तु मीनी यता न
 यत्ना तत्रो अथा हा वरि च छ यत्ता वरि च को वर्णन गर्न को न सकला यत्ता उदा र जो प्र भा
 व छ नूतन ले जुक्त हो॥ ६६॥ हे देवी तिमिले इज ना देव ता ई मोहित ग न्या जा व सज गत्वा
 मी जगवान् जागो न ईजा उ नू यो अर्जि ह॥ ६७॥ ॥

मिहेश्वर ॥ ६७॥

राम

हे देवी इन्द्र देव मरिजा उ नू जगवान् जागो न ईजा उ नू मेधा क्रुषि नं छ नू हे राजा हो यत्ता
 तर हसित व स्ना ले देवी को लु ति ग दी॥ ६८॥ विष्णु क न जागा कु न मधु कैटभ देव को नाश ग
 नं क न आषामा ना क मा हा त वा ट व स थ ल दे वि॥ ६९॥ निस्त्रि क न अ व्य क्त ज न्मा वृत्ता क न द
 बोधश्च क्रियता मस्य हंतु मेतौ महा सु रौ॥ ॥ क्रुषि रू वा वा॥ एवं लुता न दा देवी ता म सी त
 त्र वे ध ता॥ ६८॥ विष्णोः प्र बोध नार्थो य नि हंतुं मधु कैटभो॥ नेत्रा स्य नासिका या ऊ रु द
 ये न्य स्त थो र स॥ ६९॥ निर्गस्य दर्शने तस्थो ब्रह्मणे य क्त ज र्म न॥ उ न स्थो व ज ग त्रा थ स्त या सु
 को ज ना र्द न॥ ७०॥ एका र्ण वे हि श य न त नः स द द शो य तौ॥ मधु कैटभो दुरा त्मा वती वी य
 परा क्र मो॥ ७१॥
 शन दी क न ज ना र्द न क न छा डी आ पु श्री कृष्ण उ ठि क न घ डा कुं थ्या॥ ७०॥ ते स वे ला बा दे व छ
 त ए कार्ण व पृ थी न या को रहे छ मधु कैटभ देव घ डा भ या का र ह्या छ न व डा व लिया परा क्र
 मी छः॥ ७१॥

25

15

10

5

उर्गाः

२

को धलेला लाल आषाग नाको रहेछ बस्ना लाई हांन कनतया भयाकार छाप्ला देल का डबल
भगवान् आफु तन संग लडाई गथ्यो ॥१२॥ पावहु जा र वर्ष सम विष्णु को र दुई देव को लडाई भयो मुष्टि
झुझुदा हा ना को ही पनि नहि हुं थो बल ले उने भया कां देव भ्रंछ न सा वास पुपल डाई गरि सब मा
ग जनि विष्णु छे उ कहं थ्या ॥१३॥ देव को यस्ता वाक्य सुनि ति मि दुई देव मे राव ध्य भया भनि विष्णु ले

को धर कै साण वचुं ब्रह्मा एं जनि तो घमो ॥ समुत्थाय ततस्ता आं यु यु धे भगवान् हरी ॥१२॥
पंचवर्ष सहस्राणि वाडु प्रहरणे विभुः ॥ तावप्यतिबलोनमो महामाया विमोहि तो
॥१३॥ उक्तं वं तो वरोत्तमो वि यता मितिकेशवां ॥ नगवान् युवावा ॥ भवेता मध्यमे लुष्टे
मम वध्या युभा वपि ॥१४॥ किमन्येन वरेणात्र एतावद्विवृतमया ॥ ॥ ऋषि हवावा ॥

वंविताभ्यां मितितदा सर्वमायो मयं जगत् ॥१५॥

वरमाप्ता छन ॥१४॥ अहय ब्रम मां देन जनि मेधा ऋषि भ्रंछ न हे नृप हां दात हा न तर जहा
पानि न भया का जग मा भनि जल मय पृथ्वी दे धि कन क ह्या छन ॥१५॥ ॥ राम ॥

रामः

२

जलमय माषडा भया को भगवान् दे धि ठगा इ को कुरा गरी वरदान भगवान् लाई दिया थ्या ॥१६॥ मेधा ऋ
षि भ्रंछ न विष्णु ले लो न नि शंख चक्र गदारी कन चक्र ले जा घमा डुइटा को सिर रा धि कन काटि का
र्यो ॥१७॥ हे सुर थरा जा हो प्रथम वरि त्र मा य ता त रह दुर्गा पै दा भई व स ले लु ति ग ना को धियो व

विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेशण ॥ आभ्यां जहिन यत्रोर्वा सलिलेन परिप्लुता ॥१६॥ ॥

ऋषि हवावा तथे त्युक्ता भगवता संखचक्र गदा भृता ॥ कृत्वा चक्रेण वै द्धि ने जघने शिरसी त

मो ॥१७॥ एव मेधा समुत्पन्ना य ह्या एणं संलुता स्वयां ॥ प्रभाव मस्य देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि

ते ॥१८॥ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्त्र रे देवी म हा त्मे म धु के ट भव धो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥

स्तोतन काय जाव छ फेरि पनि तन को उच्चा नि विस्मार कहं छु ति मि रा मो गरि चित्त लाई सुन भ
नि मेधा ऋषि ले सुर थरा जा र समा धि वै श्य कन आजा न थो जनि मार्कण्डेय जे भी नि कहं छर

॥१८॥ ॥

॥१८॥ ॥

५गर्ग

१०

मेधाऋषिचंद्रन. हेराजाहो पहिले देवता को र. देव को एक शयवर्वसंम. इंद देवता संग महिषासुर. वडोलडाइकुंथो॥१॥ तहालडाइमा देव देवता को लडाइ कुं दामा. देवता को पोद सवहा परी भाग्या
देवता जिती कनइंद्र पद विमहिषासुर देव लेली कन वस न्या भयो॥२॥ ताहां पछि हार पारि भाग्याः
ऋषि हवाच॥ देवा सुर म भू युं पूर्ण मय शत पुरा॥ महिषे सुराणां मधि पे देवानां यपुरं
दरो॥१॥ तत्रा सुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यपराजितं॥ जिह्वा वसकलान् देवानि नो भूमहिषासु
रा॥ शानतः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापति॥ पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजो
॥३॥ अथाकृतंतपोत्तद्धमहिषासुरवेष्टितं॥ त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तारं॥४॥
कास देवता पद्मयोनि जीव लाहं. ति अघिलाई कन जाहा विष्णु. शिव वस्या को जर्ग पुगण्या॥३॥
जलोलडाइमा. नया को. यित्ता राधियो. महिषासुर देव को. येष्टा सवहि देवता आहु दुःख रवि पता पा
या का भन पस्या॥४॥ ॥

राम

१०

सूर्य को इंद्र को अग्नि को चन्द्र माको. यम को बहूण देवता को. जाके हिका जकुरोग न्या महि
षासुर देव ले. आपू गरिवि स्या को छ॥५॥ महिषासुर न्या देव. वडो दुरात्मा र हे छ. त्यस ले
सव देवता हरु तगा न्या छनू पछि वीमा मानि सहि न्या जे इंद्र॥६॥ मोरुष्ट देव को वेष्टा आहु
सूर्येन्द्रा ग्यविले नूतां यम स्य वहुण स्य च॥ अन्येषां वाधिका रास स्वयमेवाधितिष्ठति॥५॥
स्वर्ग निराकृताः सर्वे तेन देवगणानुवि॥ विवरंति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना॥६॥ एतद्ध
ः कपितं सर्वममरारिविबोद्धितं॥ शरणं वप्रपन्नास्मो वधस्तस्य विचिंत्यतां॥३॥ इत्यं निश
स्य देवानां तवां तिमधुसूदन॥ वकारको पंशं लुं अक्रकुटी कुटीलाननौ॥८॥ ॥
दुःख कहि सकुं न मो सरण पनि आइ पुपुं त लो जूनान र वध क्काना स इ छ. तो विचार जानि गर्ग
हवस॥ ॥ यत्तो सव वस्रा दि देवता को फेर द शुनिक न विष्णु को र शिव को हृदय मावडे तिग पा
नईने व न वरी पारी

वः डि

११

नाहमहि विष्णु का मुख बाट वृक्षा का शिव का मुख बाट वडो ते जवन को पजु क न शो न लं थ्या ॥
२॥ अरु देव देवता का देह बाट इड का देह बाट वडो ज पुंज निस्को न्यो ज पुंज को पर्वत जलो न
ई व ठ न लाग्यो ॥ १० ॥ न्यो ते ज मर्वन भ र व द्या को देवता देष छ न जाला ले द श दिशा व्याघ्र न
त नो नि को प पूर्ण स्य च क्रि णो व द नान्न नः ॥ निश्च का म म हं ते जो वृक्ष णः शंकर स्य व ॥ २ ॥
अ न्ये षां वै व देवा नां श का दी नां श री र तः ॥ निर्ग तं सु म हं ते ज ल चै क्यं स म ग द्ध न ॥ १० ॥
अ ती व ने ज सः कू ठं ज ल न्त मि व प र्व तं ॥ द द सु स्ते सु रा स्त त्र जाला व्याघ्र दि गं त रं ॥ ११ ॥
अ तु ल नं व न ते जः स र्व दे व श री र जं ॥ एक स्थं त द भू त्त री व्याघ्र लो क त्र यी त्वि षा ॥ १२ ॥
या को र हे छ ॥ ११ ॥ ए स्ता ते ज प र्व त बा ट ए क रा मो ल्य रू प वं त न या की ल्खी उ त्प न्न न ई न स र का
ल्य रू प ले ती न लो क व्याघ्र न या को र हे छ ॥ १२ ॥

रामः

११

का

न१

का

जो शो नुं ते ज वा ट त नू को मुख रू प कुं थो शि र को रों ज म का ते ज वा ट कुं थो विष्णु ते ज ले वा कुं थो ॥ १३ ॥
बुध का ते ज वा ट दु इ गो य स्त न कुं थो इड का ते ज वा ट नु णी कुं थो व रु का ते ज ले ति ग्रा द्ध ति कुं थो पृ थ्वि
का ते ज वा त नि तं व कुं थो ॥ १४ ॥ वृ क्षा का ते ज वा ट दु इ पा ड कुं थो सूर्य का ते ज वा ट पा दां गु ली न ई
य द नु दान वं ते ज से ना जा य त त न्मुख ॥ या म्ये न चान व नू केशा वा ह वो विष्णु ते ज सा ॥ १३ ॥
सौ म्ये न स्त न यो र्ग मं म ध्ये चै द्रे ण चान व त् ॥ वारु णे न व जं घो रु नि तं व त्त ज सा भु व ॥ १४ ॥
वृ क्ष ण स्ते ज सा प्रा दो त दं गु लो क ते ज सा ॥ व स नो च क रं गु ल्यः कौ वे रे न च ना सिका ॥ १५ ॥
त स्या सु दं ताः सं नृ ताः प्रा जा प त्ये न ते ज सा ॥ न य न त्रि त यं ज जे त था पा व क ते ज सा ॥ १६ ॥
व सु का ते ज वा ट वार हा त का आं गु ली च ई कु वे र का ते ज वा ट ना सी का कुं थो ॥ १५ ॥ अ जा
प ति का ते ज वा ट दा त कुं थो त से अ ग्नि का ते ज वा ट ति न्द्रा षा न या छ न् ॥ १६ ॥ ॥

च: ४१

१२

नेत्रलुवसंध्याकातेजकुंध्या॥कर्णवायुकातेजवाटकुंध्या॥अरुसवदेवदेवतांतांतजलेसम
स्तसरीरनरीपूर्णकुंध्या॥११॥ताहापदिसवदेवताकातेजवाटकुंध्या॥अत्रनयाकीजोदुगोदुन
तनकास्वरूपदेवीकनमहीषदैत्यतेशोयाकासवदेवताहैषकनप्राप्तकुंध्या॥१०॥पि
ऊवोचसंध्यायोलेजःश्रवणावनिलस्यत्र॥अनेपाचैवदेवानीसंनवसेजसांशिवा॥१०॥
स्ततःसमस्तदेवानांतेजोरासिमनुकुंध्या॥तांविलोक्यमुदप्रोपुरमहिषादिता॥१०॥मूलं
श्रुतादिनिःकृपाददोतस्येपिनाकधृक्॥वक्रं च दत्तवान्कृपाःसमुत्पाश्रयचक्रत॥१०॥
शंखचवहृणाःशक्तिंददोतस्येकुतासना॥मारुतोदत्तवाश्यापवाणप्रणोतयेधुधी॥२०॥
नाकधृक्नन्नामहादेवलेत्रिशूलहातमादिन्यामयात्समुदगोकाकनचक्रजोआशुवेदुत्तोक
हदेवतादिन्या॥१२॥वरुणदेवतालेशंखहातमादिन्यादुम्नश्चित्रिलेवर्द्धिहातमादिन्या॥
वायुदेवतालेधनुहातमादिन्यावाणपूर्णनयांकोतेनापेनिदिन्या॥२०॥ ॥ ॥

रामः

१२

इहदेवतालेवजहातमादिन्याअमराधिपजोसहसाहस्योरेरावतहातिकागलावाटनिकालीघंटदिन्या
॥२१॥प्रजापतिदेवतालेरुद्राक्षकोमालादिन्याबुलालेकमणलुहातमादिन्याजमराजालेदणहातमा
दिन्या॥वरुणलेनागपाशहातमादिन्या॥२२॥समस्तकाजपिरोमकाजउछंतमासूर्यदेवताआशु

वज्रमिंडासमुत्पाशकुलिस्यादमराधिप॥ददोतस्येसहसाशोघणमैरावतागजा॥२१॥ता॥
कालदण्डाद्यमोदणपाशंवा मुपतिर्ददौ॥प्रजापतिश्चासमालोददौबुलालेकमणली॥२२॥
समस्तशमकुप्रेषुनिजरस्मिन्दिवाकरा॥कालश्च दत्तवान्स्वर्गं तस्येचर्मचनिर्मले॥२३॥
क्षीरोदश्चामलहारमजरेचतथावरै॥चूडामनितथादिन्याकुणलेकठकानिच॥२४॥

नेजदिन्याकाललेतरुहातमादिन्या॥२३॥दूदकोसमुद्रलेगलामालाउमापेटिकोमालारनया
धेरसुंदरलुगादिन्यामयोमस्तकमालाउमाचूडामणीपनीदिन्याहातमासुनकोचुरादिन्याम

॥२४॥

दुर्गा

१३

कपालमाराधनकन अर्धचंद्रमानयोऽनुवर्णकोसमस्तहातमालाउन्नावेसवेसगजानया॥२५॥ श्री
गुलीमालाउन्नावरत्नमालाअंगुठीदूदसमुदलेदियो॥विश्वकर्मावडोकादन्नावंरोदिन्यानयो॥२६॥
अनेकरूपकाहानिया रत्नयाअनेधजिराउन्नायो कमलकामालाकुलकामालाअज्ञाननयाको

अर्धचंद्रतयाशुभ्रंकेरोयुशसर्ववाङ्मय॥नूपरोविमलोनद्वेयकमन्तमं॥२७॥
अंगुलीयकरत्नानिसमस्तस्वंगुलीयुव॥विश्वकर्माददोतस्वेपरंभुवातिनिर्मलं॥२८॥
अस्त्राण्यनेकरूपानितथा मेयवदशनं॥अज्ञानप्रकजामालासिरस्युरसिवापरो॥२९॥
अद्वजलधिलस्येप्रकजंवातिशोभनं॥हिमवोन्वाहनसिंहरत्नानिविविधानिच॥३०॥
समस्तदेहनरीप्रणकुंभोजस्का॥३१॥जलसमुदलेयतिथोकदियोहातमाराधनकनएक
कुलकमलकोपनिदियो॥हिमालयलेअसवारीगर्नकमसिंहदियोअनेकतरहकारत्नप

॥३॥ १३

कुवेरलेमदकाकुंभःअरिमददिन्यानयो शेषनागलेमहामणिशोभितनयाकोनागकोमाला
न्यानयो॥३२॥जोशोखनागलेयत्रोद्युधिवीवायाकोरतिथोकदियोअरुदेवदेवतारुहलेअने
कतरुकारत्नपनिदियोअरुदेवताअनेकगहनाहृतियारदीकना॥३३॥वडोसमानगदीनो
दयावश्रुतांसुरयापानयात्रंधराधिपाशेषअसर्वसागेशोमहामणिविभूषितं॥३४॥
नागहारंददोतस्वेधनेयःपृथिवीनिमां॥अनौरपिसुरैर्देवीभूषणैरायुधैरुहाथा॥३५॥सं
मानिताननादोषैःसादृहासंमुहुर्मुहुतातत्पानादेनघोरेणाहसमापूरितंनभा॥३६॥अ
नायतानिमहतापतिशयोमहानभूत॥यसुभ्रंयकलाजोकाःसमुद्राश्रयकपिरे॥३७॥ ॥
दुर्गापनिवडोअष्टादहासशयकनवारंवारगर्भाभरंतनूकावडाशयरोपपल्लआकासमणिपूर्ण
कुंभयोगरो॥३८॥तलोत्तोशयवह्निपनिनअष्टाउन्नात्पारलेवडोप्रतिशयकुंभोत्तलेशयलेवोद
लोकरसातसंनरुकासूनलाययो॥३९॥ ॥

इगर्गः

१४

वसुधापृथ्वीकनथामन्यासर्वतपनिकामन्या. त्वस्येलाभादेवताहृजयजयशयकहंथा. आधस्तमाधेर
मुसीभयदुन॥३३॥ सवजतिभयाका. नैधीश्चरुतिगर्था. नक्तिलेनेमि तशितगरीवजतेलुतिगर्था. समता
लोकवर्चनेले. कामरुन. अमररीपनितर्सथ्या॥३४॥ तोंहो पद्विजतिभयाकादेत्यका. तर्दीहलकरथिया
ववालवसुधाबेलु. सकलाश्चमहीधरा॥ जयेतिदेवाश्चमुदातामूचु. सिंहवाहिनी॥३३॥ तु
बुबुमुनयशेनांभक्तिनम्रात्ममूर्तया॥ दृष्टासुसुतांसंसुध. त्रैलोक्यममरारया॥३४॥ स
त्रक्षाविलसेन्याहो. सेमुत्तस्थुरुदायुधा॥ अंकेमेतदितिकोधादात्राध्यमहिषासुरा॥३५॥
अभ्यधावततशय. मशेचेरसुरेष्टत॥ सददर्शततोदेवी. व्याप्तलोकत्रयींत्विया॥३६॥ ॥
लगाईगर्नकोईकागुन्याश्चरेद्योउत्पातकाहावाठभयोचनिमहिषासुरदैत्यगर्जनगर्था॥३७॥ ताहा
पद्विभोमहिषासुरदैत्यसेशदपुष्टिवाठदगुन्याभयोजतिभयाकाकोदपनीसंगलिन्यानमोताहा
गईदेष्टरुन. तकादर्शनलेतीनेलोकव्याप्तनेयाकाछन॥३६॥ ॥ श्रीअचिकायेनमः॥

राम

१४

पादकातेजले. पातालव्याप्तभयाकोरु. मरुककाकांतिले. आकाशव्याप्तजंथो. धनुषकाटां
कारले. दशदिशाअभिवाप्तभयाकारहेरु॥३७॥ हज्रा. हातलेदशदिशा. व्याप्तगन्याको. रहे
छ. यस्तोदुर्गाको. अथाहारुपदेष्टिकनवडो. कोयजुक्त. जईकन. महिषासुर. का. मनमा. लडा
ईगर्नको. इह्वाभयो॥३८॥ शस्त्रअस्त्रको. धेरैवघोगरीकनदिसासवतेजलेपूर्णभयाको
पादाकांत्यानतनुवं. विरीटोस्त्रिवितांवरं॥ शोभिताशेषपातालां. धनुजानिस्त्रनेन
तां॥३९॥ दिशोभुजसहस्रेण. समंताद्यायसंस्थिता॥ ततःप्रवन्दतेयुद्धंतयादेव्यासुरदि
षां॥३९॥ शस्त्रास्त्रैर्वरुधामुक्ते. रादीपितदिगंतरं॥ महिषासुरसेनानि. असुराण्योमहासुर
॥३९॥ युयुधेवामरश्यामैश्चतुरंगवलेनिता॥ रथानामयुतैःषड्विहृदग्राह्योमहासुर॥४०॥
रहेछताहापछिमहिषासुरदैत्यकोसदोरविसुरनामादैत्यअधिसरीलउथो॥३९॥ ताहा
पछिवाभरनामादैत्यचतुरंगकोदलीलउथोछअयुतकोदलीकनरथवानलीउदग्रनाहि

इह्वाभयो॥३८॥ शस्त्रअस्त्रको. धेरैवघोगरीकनदिसासवतेजलेपूर्णभयाको

दुर्गाः

१५

महाठनुनामदेत्यलेहजारअयुतफौदलीसंग्रामगर्वाजघोषवासनियुतफौदलीकनअसिलो
मानामदेत्यलडाईगथी॥४१॥वाक्कलनामदेत्यसुसयअयुतफौदलीदुर्गासंगलडाईगथीहा
थीघोराकोहजार२फौदलीकनअनेकतरहकाफौदलीलडाउनाजयो॥४२॥विडालनामदे
अयुधानायुतानांचसहस्रेणमहाहनु॥पंचाशद्विअनियुतेरसिलोमामहासुर॥४३॥
अयुतानांशतेषद्विवाकरोयुयुधेरणे॥गजवाजिसहस्रोधैरनेकैःपरिवारितः॥४४॥
वृत्तोरथानांकोद्याचयुधेतस्मिन्नयुधय॥विडालाख्योमहादेत्यपंचाशद्विरथायुते॥४५॥
युयुधेसंयुगेतत्ररथानांपरिवारितः॥अमेवतत्रायुतसोरथनागरुधैर्वृत्ता॥४६॥
त्यकोटिरथलीकनआइवजोवलयुक्तदुर्गासंगलडाईगथीविडालदेत्यपंचाशनियुतसंगलडाई
गथी॥४७॥अरुजोदेत्यकालस्कररु॥तिसवलडाईकोसराजामसंयुक्तसितहजार२रथहानिघो
राजुक्तग्रहगरीलडूथा॥४८॥ताहापद्विडावडावलवंतआदिदेत्यअनु२फौद॥ ॥ ॥

तम

१५

२

वलवुद्धिअषत्वारनईकोटि२हतिरथघोशलीकन॥४५॥घोशमाचल्याकाअसवारलीकनमहिषासुरदेः
समध्यमावस्योतोमूरभिदिपालवर्द्धिरमुशलजोआयुधरुत्यते॥४६॥देत्यरुदुर्गासंगलडाईमाको
इतरवारकोहीवचकोहीपटीसहनियारचलाउनाकोहिवर्द्धीचलाउनाकोहीडोरीकेकनाभई
युयुधुःसंयुगेदेयाःसहनत्रमहासुरा॥कोटिकोटिसहस्रेसुरथानांदनिनांतथा॥४५॥
हयानांचवृत्तोयुद्धतत्राचमहिषासुरा॥तोमरैभिदिपालेस्त्रिशक्तिभिर्मुशलेसथा॥४६॥
युयुधुःसंयुगेदेयाःखड्गैःपरशुपट्टिशैः॥केचिवविसिधुःशक्तिःकेचिन्माशांसथापरे॥४७॥
देवीखड्गप्रहारैस्तुतेताहंतुंप्रचक्रमु॥सापिदेवीततस्तानिशआण्णआणिवणिका॥४८॥
लडूथा॥४९॥दुर्गाकनहामिआत्रनहानिहोउनाछैनप्रनादेत्यवजोकोपगरीअनेकहतिवार
चलाउनाचणिकालेजतिआशुमाथिआईपयाकाहतिवाररुक्तेगथीन॥४८॥ ॥ ॥

१६

१६

यसंख्याचलन्याकोहीदैत्यघंटा,स्वरलेखिमोहितगरीनाशकनपात्रकुंठ्या॥५५॥कोहीदैत्यडोरीलेव
धिकनयनाउतालडन्याकोहीदैत्यलाईवडातीक्षणतरवारलेमारन्या,यक्षातरहदैत्यफौदका॥५६॥

५७

५७

जि१

कोहिदैत्यमाथिगदाकोनिपातगरीनेमासुताउयाकोहिदैत्यलाईमुशललेताडितगरीरुजा
नदीबहाउग्याहुंथ्या॥५७॥कोहिदैत्यकाहृदयमात्रिशूललेहानिकनदैत्यनेमातोदीमर्था निर
तरवाएवषोलैरणभैमासुतग्याहुंथ्या॥५८॥लेनपछिलेकसेकाप्राणउद्याइअकासमालेजा
विकोषितानिपातेनगदयाभुविशेरतोवेमुश्चकेविदुधिरंमुसलेनभृशंहता॥५९॥वेदि
त्रिपतिताभूमोजिनाःश्वेनवक्षसि॥निरंतराःसरोधेनकृताःकेविदुणजिरो॥५८॥त्येना
नुकारिणःप्राणान्मुमुक्षुदशादेनाकेषांविद्याहवश्चित्राश्चिन्नापीवाहथापरोपरासि
रांसिपेनुरन्येषामन्येमध्येविदारिता॥विद्धिन्नजंघात्त्वपरेपेनुरुर्यामहासुरा॥६०॥ ॥
नाभयाकसेकाहातनाहीकसेकापीवनाहीकोहीवडाशोरलेवहीरभईमन्याभया॥५९॥ राम
कसेदैत्यका मध्यनाहीकसेकाजंघानहीकोहिकास्तिरकाद्याकादैत्यनेमापरिलोद
नाभईमर्था॥६०॥ ॥

राम

५८

कोहिदैत्यकाहातनाहिकसेकषुटोनाहीद्विषण्डनयाकारकहातहीजोदैत्यकाशिरकाघामनिउठिकन
सुड्या॥६१॥कबंधजोशिरनभयाकोदैत्यहंतित्वडतरवारहातमालीकनदेवीसंगसुड्याकोहिकबंधनया
कोदैत्यसुडमाकावाघमातातसमनायनाभया॥६२॥कबंधजोशिरछेदभयाकोदैत्यहरुखड्गवद्धिहात
एकवाहुशिवरणःकेविदेवादिधाकृता॥द्वित्रैपिवायेशिरसिपतिताःपुनरुत्थिता॥६३॥कव
धायुधुर्देवाएहीतपरमायुधा॥ननुश्चापरेतत्रयुद्धेत्तर्यतयाश्रिता॥६४॥कबंधाश्चिन्ना
शिरसःखड्गशक्तृषिपानय॥तिष्ठतिष्ठेतित्रायंतोदेवीमन्येमहासुरा॥६५॥पातितैरथनागा
श्चेरसुरैश्चवसुंधरा॥अगम्यासाभवन्नत्रभूतैःयत्राभूत्समहारणः॥६६॥ ॥रामः॥ ॥

मालीदेवीमाथितिष्ठन्ननिलड्याभया॥६३॥अर्थताहापछित्यसलडाइमा मान्याकोपीनागहा
थीघोरादैत्यकारगतलेवसुंधराजोपृथ्वीअगम्यभयाकारककोनदीवह्या॥६४॥ ॥रामराम॥ ॥

दुर्गा

१८

तत्र ताहा संग्राम भूमि मध्ये शोणित नारागत काय वा रुवला की नदी जहात हा असुर सैन्या का ॥ १८ ॥ का पोरा का
मागमार कनदी भया ॥ १९ ॥ सोणे नत न सोणे मा अं विकाले देव का मा सैन्य फौद कन जलो दा रुवा मा आगात गा
यो रे नाश बर्दी भई ॥ २० ॥ आगले घास जला या जलो फोजना शिंदा सिह पनि शक्य कन गे दे आका देह का रोष डाग

शोणितौ घाम हा नयः स घसत्रः विमुमुवुः ॥ मध्ये वासुर सैन्य वा न गा सुर वा जिना ॥ २१ ॥ सोणे नत
महा सैन्य मसुरा गांत थां विका ॥ नित्य सयं घघावहि क्लृण्ण दा रुम हा यया ॥ २२ ॥ सव सिंहो महा
नाद मुत्त जन धुत केशर ॥ शरी रे भो मररी णं मर निव विवि वति ॥ २३ ॥ देवा गणे श्रुते क्लत्र
कृत युद्धं तथा सुरे ॥ अथे ना नु यु यु देवाः पुष्प वष्टि मुवो हि ता ॥ २४ ॥ ॥ इति मार्कण्डेय
पुराणे सावर्णि के मन्वन्त रे देवी महात्म्ये महिषासुर सैन्य वधो नाम द्वितीयो ध्याया ॥ २५ ॥

री देव का प्राण को मोक्ष गर्वा नयो ॥ २६ ॥ दुर्गा को जोगण छंन र ले जुद्ध मा देव हर का समूह को
विनास गर्था ॥ ता हा पद्धि देव ता जति न मा का दुर्गा को लुति गु न्या न या आका स वाट पुष्प वष्टि
गर्वा न या ॥ २७ ॥ एति कथामि घावा स्रण ले सुर थ वी स कन आशा न या न नि मार्कण्डेय ले जे मनि

कन आशा न यो ॥ २८

मेधा नाम कृषि नंद न निरु न्य मान का हा निस का को आ कु फौद ली कन एक वि सुर नामा देव श्री
कामाचिको पगरी कन लडाई गन कन उद्यो ॥ २९ ॥ लो वि सुर नाम देव तडा इ मा वा ल व र्धा ग यो जि हो
सुवर्ण वल मा व र्धा ले अजि बा स्रुं रु ता लो वा ल व र्धा ग यो ॥ ३० ॥ दुर्गा ले त स देव को वा ल स मूह

कृषि रुवा वा ॥ निरु न्य मानं त ले न्य सव लो क म हा सुर ॥ से नी नी शि सुर को ॥ प्रयो यो दु
म थां विका ॥ ३१ ॥ स दे वी शर व र्धे ण व र्धे स म रे सुर ॥ य धा मे रु गि रे श्रुं तो य व र्धे ण तो य
॥ ३२ ॥ त स्य द्वि त्तो दे वी ली ल ये व श रो क रा ना ज घा न नु र गा न वा रो य मार ये व वा नि म
॥ ३३ ॥ वि दे व धनुः स शो ध जं वा तिस मु छि तं ॥ नि या ध वे व गा ने पु छि न्न ध न्वा न म सु गो ॥ ३४ ॥

थाले ले छि न्न गरी त स दे व को रु न्या ही र्घो रा र्धे न वा ल ले सार पी को ना श गे नो न ई
॥ ३५ ॥ त लो ध नुष प नि प ता का प नि र का वा ल त का पी ल र्धे नु का सा को जो वि सुर दे व स
नो के रिय नि दुर्गा की दे ह मा वा न ले पी डा ग यो न यो ॥ ३६ ॥

सार पी

25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35

धनुनभयाकोरधनभयाकोसंवकाटिकायाकारहाऊनउत्तापनिदुर्गासकनहातरवारहातमाहीकनदगु-
थो॥५॥तासदैत्यलेतीघोतरवारलेसिंहकोकपालमोहानीकडुर्गासाहिनाहातमाहाथोवजोवेगसितेव

सद्धित्रधनाविरथोहताओहतासारथिषु॥अनधावततांदे॥खड्गवभधरासुर॥५॥
सिंहमाहताखड्गेगातीक्ष्णधारेणामुहनी॥आजधाननुजेसुखदेवीमयतीवेगवान्॥
तस्याःखड्गोनुजेप्राप्यपफालनृपनेदने॥तस्योजग्राहशूलसकापादेरुणलोचने॥७॥
चिह्नेपवततस्तनुभद्रकात्मोमहासुर॥जाज्वल्यमानेतेजोनिर्विविधमिवावरात॥८॥

लया॥६॥हेनृपनेदनसुरधराजाहोदैत्यलेहान्याकोतरवारहातमायुगनमात्रै नमिमापथ्योतहापद्धि राम
विश्रुलहातमालीकनलालआघागरिकोपगरीरह्यानयो॥७॥नडकालीमाथित्योदैत्यश्रुलहान्याजा
ज्वल्यमानआकाशवाटस्यविंशपन्याजसेदुर्गामाथिपथाडनानयो॥८॥॥नवाणीप्रीतिरम् १८

त्योदैत्यले.पठायाकोशूलआफुमाथि.आईपन्याकोदेष्मादुर्गापती.शूलआपूध.तेसमाथि.उजाउन्याभयो
त्योदुर्गाकाशूललेदैत्यशूलपनि.दैत्यपनि.काटिन्याभयो॥२॥महावीर्यजो.विदुरनामदैत्यमान्यापद्धि.हृषि
मावहिकनवामरनामादैत्य.देवताहरुकनतर्ताउन्या.दुर्गामाथिआइलागन्याभयो॥१०॥त्योदैत्यपनिव
र्द्धि.अंबिकामाथिवलाउन्याभयो.तिनूलेपनिकुंकरगर्निमात्र.जयमानिवर्द्धि.पुनवभैवलाउन्याभईन्

दृष्टानदापतकूलंदेवीशूलममुंवता॥नक्षत्रंशतधातेननीतंसयमहासुरा॥२॥रुतेतस्मिन्म
हावीर्यमहिषस्ययभूपतो॥आजगामगजारूढआमरत्तिदशार्दन॥१०॥शोपिशक्तिंमुमोवाय
देव्यात्तामंबिकाप्रतां॥कृकारानिहतांभूमौपातयामासनिप्रभां॥११॥जग्राशक्तिनिपतितीदृष्टा
क्रोधसमचित्॥विद्धेपवामरशूलं.वाणोत्तदपिशाछिनन्॥१२॥ततःसिंहोत्तमुत्पत्य.गजकुंभान्त
रस्थितः॥वाहुयधेनयुधै.तेनोच्चैस्त्रिदशारिणाम्॥१३॥॥

॥११॥त्योवर्द्धिभैमापन्याकोदेघिकनवडाक्रोधलेपूर्णैकनवामरदैत्यले.मान्याकोवर्द्धि.तिदुर्गाका
टिकातन्याभईन्॥१२॥ततःसिंहोत्तमुत्पत्य॥॥ताहापद्धिसिंहले.हाथीकागंडस्थलमावांसिवाभरदैत्यसं

वाहुयधेनयुधै.तेनोच्चैस्त्रिदशारिणाम्॥१३॥॥

25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

35

दुर्गा

२०

देवता हर को राघु जो वामर देत्य कनया धन्या उवल गथ्यो ॥ १३ ॥ सिंह को रवामर देत्य को बाहु युद्धा हा
धी देवी नैमा उत्री कन दुइ जना को वडा बल सित अति दारुण जो प्रहार मारण छुन्यो गर्भो ऊथ्या पृथिवी
मा वामर देत्य को र सिंह को यडो युद्ध तमा साहुं थ्यो ॥ १४ ॥ ता हा घाछु बडो वेग ले अकाश मणि सिंह ले वा
मर देत्य को शिर काटि फालि कन नैमा पथ्यो ॥ १५ ॥ उदय देत्य र कराल नाम देत्य शिला र वडा दांते र मु
युद्धा मानौ तन तो तु तस्मात्रा गान्मही गतौ ॥ युद्धा ते तिसं रक्षो प्रहारे रति दारुणौ ॥ १६ ॥ सिंह
न तो वेगा त्वमुत्पन्न निपत्त वमृगारिणा ॥ कर प्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कर्त ॥ १७ ॥ उदय
श्चरणो देव्या शिला वडादिभिर्हतः ॥ तं दमुष्टितले श्वेव करालश्च निपातिनः ॥ १८ ॥ देविकु
डा गदा पातैश्चूर्णयामास योद्धतां ॥ वाक्कलं जिहीपालेन वाणैस्तान्प्रतयांधकम् ॥ १९ ॥ ॥
छिहत उलाले दुर्गा जो भगवती दुई देत्य को बिनाश गर्भो भईन ॥ १६ ॥ देवी कुद्ध भया यछि उद्धत
जो वाक्कल नाम देत्य छत सलाई गदाले मार्भो भईन अंधक नाम देत्य कन जिही पाल र यानवर्षा
मा मार्चि न ॥ १७ ॥ ॥

राम

२०

परमेश्वरी दुर्गा छन तिवडी उग्रवीर्य जो उग्राल देत्य छ त्सलाइ महा हनु देत्य लाई त्रिशूल आयुध
ले मारी कसुता उग्र भईन ॥ १८ ॥ विडाल नाम देत्य को तरवार ले देह का मध्यमा काटि सुता उग्र भई
न उद्धर नाम देत्य को र दुर्मुख नाम देत्य को बाण ले शिर काटि फाल त्या भईन ॥ १९ ॥ एव एस्ता सररु
उग्राल मुग्रवीर्य वतथे वमहा रुनुं ॥ त्रिनेत्रावत्री शूलेन जघान परमेश्वरी ॥ २० ॥ पमि
विडाल स्यासिना कायात्पातयामास वैशिरां ॥ दुर्द्धर दुर्मुखो जोशारे त्रिनयन मक्षयम् ॥ २१ ॥
एवं संक्षीयमान तु त्वसैन्यमहिषासुरा ॥ माहिषेहास्वरूपेण त्रासयामास तां गणां ॥ २२ ॥
कांश्चिन्नुपहारेण पुरच्छिपेत्तथा परात् ॥ लांगुलस्ताडितान् श्वानां क्षृगाभ्यां विदारितान् ॥ २३ ॥
ले आक्रा आक्रा फौज को नाश भया को देष दा सदा रपनि लक्ष्मण नि नाश कन प्राप्नो भया को हे दीमा
हिष जो वडारांगा को रूप गरिकन दुर्गा गणला इत शा उग्र भयो ॥ २० ॥ न्यो रांगा को रूप जे कन माहिषना
मा देत्य कसे लाइ मुषे ले मार्भो कसे लाइ पुर ले कसे लाइ पुछर ले कसे लाइ सिंह ले मार्भो भयो ॥ २१ ॥

५ गी:

२९

कोहिलाई कोहिदतादगुर्दावेगलेमना कोहिलाई वडो सोरग रिकन कोहिलाई मुघदादनि काका
वायुले मारी कन भैमा फालन्या भयो ॥२२॥ सोमही घडे तले दुर्गा कागण काफो जमास दीरप निमारी क
न एताउतादगुरिकन दुर्गा का जो सिंह छ तको नाशगर्ना कोइ द्वागर्नी नै शयगर्नी श्री किकापनिकापग

वैगेत कांश्चिदपरा त्रायेन भ्रमणेन वा निश्चासपवनेनान्या न्यातया मास भूतलो ॥२३॥ निपा
त्यप्रथमानीक मन्मधावत तोसुर ॥ सिंह हंतुं महादेव्या कोपं चक्रे ततो विका ॥२३॥ तं पि
कोपा न्महावीर्यैः खुरक्षुण्णमहीतले ॥ शृंगाभ्यां पर्वतानुद्धांश्चिच्छेपवननादवा ॥२४॥ वेगे नु
मणविक्षुण्णमहीतस्य त्वशीयता ॥ लांगुलेन हनश्चाधिश्चावयामस सर्वता ॥२५॥ ॥

रामः

धिन ॥२३॥ सोमहिषासुरदेत्यक्रोधले खुरभैमा लाई घन्या सिंगले वडा वडा पर्वत कन फालन्या शयगर्नी
नावन्यापनिगर्नी भयो ॥२४॥ महिषासुरदेत्यकावेगले विक्षुण्ण भयाक्री जो पृथ्वी छ त्रिद्वि र्जुं थी न
पुछरसो कोरको सारले समुद्रपनि पत्ता वितसवजगायादहुं थ्यो ॥२५॥ ॥ श्री भवानि ॥

२५